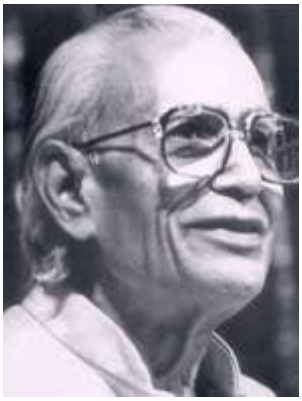

डॉ. धर्मवीर भारती

डॉ. धर्मवीर भारती एक कवि-कथाकार हैं, जो एक तरफ छायावादी रोमानियत एवं व्यक्तिनिष्ठता से भरपूर हैं तो दूसरी और प्रयोगवादी दृष्टि की कठोरता को रूपायित करते हैं| उनका साहित्य मनोविश्लेषणात्मक है | इस कारण वे छायावाद से लेकर प्रयोगवाद तक बदलते मानव मूल्यों में अपने साहित्य की स्थापना कर पाएं | धर्मवीर भारती का जन्म 25 दिसंबर, 1926 को इलाहाबाद में 'अतर सुइया' मुहल्ले में हुआ | उनकी स्कूली शिक्षा डीएवी हाई स्कूल में हुई | वर्ष 1845 में उन्होंने बी.ए. किया और वर्ष 1947 में एम.ए. में तथा वर्ष 1954 में सिद्ध साहित्य पर पीएचडी की |

इलाहाबाद से प्रकाशित साहित्यिक पत्र 'संगम' के सहायक संपादक के पद पर कार्य किया | एक वर्ष तक हिंदुस्तानी अकादमी के उपसचिव रहे | इलाहाबाद विश्वविद्यालय में वर्ष 1960 तक हिंदी विभाग में अध्यापक की नौकरी की | देखते-ही-देखते लोकप्रिय अध्यापकों में उनकी गिनती होने लगी | वे वर्ष 1960 में धर्मयुग के संपादक होकर मुंबई चले गए और 1987 तक उसका संपादन किया | उनका कहना था कि सच्चा पत्रकार स्वभाव से प्रगतिशील होता है | वर्ष 1952 में प्रकाशित दूसरा सप्तक में उनकी रोमानी कविताएं अज्ञेय जी ने एक साथ छापीं | उनका अंतिम कविता, संग्रह 'सपना अभी भी' वर्ष 1993 में प्रकाशित हुआ | नयी कविता आंदोलन के लिए उन्होंने 'निकष' पत्रिका भी निकाली और 'आलोचना' का संपादन भी किया |

डॉ. भारती ने 'गुनाहों का देवता' (1949) और 'सूरज का सातवां घोड़ा' (1952) उपन्यासों प्रेमपरक रोमानी और मानवीय मूल्यों को रेखांकित करने में पूरी तरह सफल रहे | उनकी कृति 'सूरज का सातवां घोड़ा' पर फिल्म बनी और 'कनुप्रिया' तथ् 'अंधायुग' ने साहित्य के क्षेत्र में नयी बहस शुरू की |

उनकी रचनाएं हैं

काव्य	- ठंडा लोहा, सात गीत वर्ष, कनुप्रिया, सपना अभी भी
पद्य नाटक	- अंधा युग
उपन्यास	- गुनाहों का देवता, सूरज का सातवां घोड़ा |
कहानी	- मुरदों का टीला, स्वर्ग और पृथ्वी, चांद और टूटे हुए लोग, बंद गली का आखिरी मकान |
निबंध	- ठेले का हिमालय, कहानी-अनकहनी, पश्यन्ती, साहित्य विचार और स्मृति
रिपोर्ताज	- मुक्त क्षेत्रे : युद्ध क्षेत्रे, युद्ध यात्रा, ब्रह्मपुत्र का मोर्चा
आलोचना	- प्रगतिवाद:एक समीक्ष, मानव मूल्य और साहित्य
संपादन	- अभ्युदय, संगम, हिंदी साहित्य कोष (कुछ अंश), आलोचना निकष, धर्मयुग

सम्मान एवं पुरस्कार

पद्मश्री पुरस्कार (1972), संगीत नाटक अकादमी सदस्यता, दिल्ली (1967), हल्दी घाटी श्रेष्ठ पत्रकारिता पुरस्कार राजस्थान (1984), साहित्य अकादमी रत्न सदस्यता, (1985), संस्थान सम्मन, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान (1986), सर्वश्रेष्ठ लेखक सम्मान, राजस्थान (1988), गणेश शंकर विद्यार्थी पुरस्कार, आगरा (1989), राजेन्द्र प्रसाद शिखर सम्मान, बिहार सरकार (1989), भारत भारती सम्मान, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान (1990), महाराष्ट्र गौरव, (1990), साधना सम्मन, मध्य प्रदेश (1991), महाराष्ट्राच्या सुपुत्रांचे अभिनंदन, वसंतराव नाईक प्रतिष्ठान, महाराष्ट्र (1992), व्यास सम्मान, के के बिड़ला फाउंडेशन, दिल्ली (1994), उत्तर प्रदेश गोरव, अभियान संस्थान, मुंबई (1997) |

5 सितंबर, 1997 को उन्हें नींद के दौरान ही दिल का दौरा पड़ जाने से उनकी मृत्यु हो गई |